अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी, तिरुवनन्तपुरम

शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वष़ुतक्काटु, तिरुवनंतपुरम-695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/70008 ISSN No.2456-625 X

वर्ष 7 अंक 27 त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका 10 जुलाई, 2023

पीयर रिव्यू समिति :
डॉ.शांति नायर
डॉ.के श्रीलता
डॉ.बी.अशोक

मुख्य संपादक
डॉ.पी.लता

प्रबंध संपादक
डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

सह संपादक
प्रो.सती के
डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा
श्रीमती वनजा पी

संपादक मंडल
डॉ.बिन्दु.सी.आर
डॉ.षीना.यू.एस
डॉ.सुमा.आई
डॉ.एलिसबत जोर्ज
डॉ.लक्ष्मी.एस.एस
डॉ.धन्या.एल
डॉ.कमलानाथ.एन.एम
डॉ.अश्वती.जी.आर

इस अंक में

संपादकीय	:	
समय की विद्रूपताएँ और व्यक्ति-मन की बेचैनियाँ	: डॉ. शान्ती नायर	6
आधुनिक जीवन बोध के परिप्रेक्ष्य में निर्मल वर्मा के कथा साहित्य का अध्ययन	: डॉ. वीणा जे	15
भारतीय भाषाएँ और नयी शिक्षा नीति	: डॉ. पवन कुमार शर्मा	18
सामाज्यवाद के खिलाफ गिरिराज किशोर के जूझते तेवर- 'असलाह' उपन्यास के विशेष परिप्रेक्ष्य में	: डॉ.पूर्णिमा आर	21
'तीसरा लिंग विमर्श' के सन्दर्भ में 'तीसरी ताली'	: डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल	24
वैदिक साहित्य में पर्यावरण चेतना	: डॉ.सुजित.एन.तंपी	27
आधुनिक समय में शोषित बचपन	: डॉ.विकास कुमार सिंह	30
'तुक' कहानी में चित्रित पारिवारिक घुटन	: डॉ.षेर्लिन	34
मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री-संघर्ष	: अफीफा फातिमा शेक	37
मानवतावादी कवि धूमिल	: डॉ.माजिदा एम	39
हिन्दी का वैश्विक महत्व	: डॉ.प्रीति.के	43
'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी में उत्तराधुनिक समय की पहचान	: डॉ.सी.बालसुब्रह्मण्यम	46
जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में सामाजिक यथार्थ	: दिनेश अहिरवार	48

यू जी सी से अनुमोदित पत्रिका

9. वही - पृ-115 10. वही – पृ-116
11. वही - पृ --111-112
12. श्रृंखला की कड़ियां -- महादेवी वर्मा –पृ—9; राधाकृष्ण प्रकाशन, 1942।

◆ सहायक प्रोफेसर और अध्यक्षा
हिन्दी विभाग
सरकारी संस्कृत कॉलेज, तिरुवनंतपुरम।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री-संघर्ष

◆ अफीफा फातिमा शेक , ◈ डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

शोध-सार : नारी समाज का महत्वपूर्ण अंग है। समाज की श्रेष्ठता नारी की स्थिति पर निर्भर है। आज भी भारतीय नारी अनेकानेक समस्याओं में जकड़ी हुई है। सुरक्षा के नाम पर आज भी नारी को बचपन में माता-पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन, और बुढ़ापे में संतानों के अधीन उसे रहना पड़ रहा है। परिणामस्वरूप नारी जीवन अभिशाप-ग्रस्त हो गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी-पुरुष की समानता की भावना समाज द्वारा स्वीकार की जा चुकी है। फिर भी भारतीय नारी पढ़-लिखकर अपने स्वतंत्र एवं मानवीय अधिकारों से वंछित है।

बीज शब्द : नारी, आधुनिक समाज, परतंत्रता, यौन शोषण, वैश्य स्त्री संघर्ष, कामकाजी स्त्री शोषण, विधवा स्त्री संघर्ष

मूल आलेख : नारी आदिकाल से ही सेवा, त्याग व शक्ति का प्रतीक रही है। वह आचरण में आगे एवं सहिष्णुता की मूर्ति मानी जाती है। परंतु कालांतर में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ-साथ नारी की स्थिति में भी परिवर्तन आया है। आज स्त्री किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है। भारत पुरुष प्रधान देश है। इस कारण सामान्य महिलाएँ ही नहीं, अपितु शिक्षित एवं आधुनिक महिलाओं को भी पुरुष की अधीनस्थता स्वीकार करनी पड़ती है।

"आधुनिक समाज में शिक्षित और समर्थ नारी शोषण का शिकार हो रही है। इस शोषण का कारण मनुष्य के अहंकारवादी एवं प्रभुत्व प्रवृत्ति है जिससे वह आज भी मुक्त नहीं हो पायी है। समाज में नारी सर्वाधिक पीड़ित एवं शोषित है। पुरुषों का दुर्व्यवहार, कामवृत्ति, स्वार्थी भावना, नारी का दुर्बल व्यक्तित्व आदि नारी शोषण के मुख्य कारण हैं।"[1]

हिंदी कहानी की दुनिया में मनीषा कुलश्रेष्ठ का नाम प्रसिद्ध माना जाता है। मनीषा जी ने अपनी कहानियों में स्त्री की हर स्थिति का वर्णन किया है। किस प्रकार स्त्री सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं मानसिक रूप से शोषण का शिकार हो रही है, किस प्रकार स्त्री के आत्मसम्मान और स्वाभिमान को चोटिल किया गया है उसका वर्णन लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाया है। स्त्री की मनोदशा को परखते हुए मनीषा जी ने अपनी कहानियों में बेमेल विवाह, आर्थिक मज़बूरी, विधवा स्त्रियों का शोषण आदि का चित्रण बड़े मार्मिक ढंग से किया है।

'कठपुतलियाँ' कहानी में बेमेल विवाह का वर्णन हुआ है। रामकिशन एवं सुगना कहानी के मुख्य पात्र हैं। जीवन में आये उतार-चढ़ाव कैसे पूरी ज़िंदगी को बदल डालते हैं, कैसे एक स्त्री को कठपुतली की भाँति नचाते हैं-इनका वर्णन किया गया है। पहले सुगना का ब्याह जोगिंदर से तय होता है, मगर सुगना के पिता के गुजर जाने के बाद अधिक दहेज माँगने के कारण रिश्ता टूट जाता है। सुगना तेरह साल की है जबकि अपाहिज रामकिशन तीस साल का विधुर और दो बच्चों का पिता है। यह बेमेल विवाह सुगना के

जीवन में तूफान ले आता है।

स्त्री स्वतंत्र होने के लिए उसे शिक्षित और स्वावलम्बी बनना ज़रुरी है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'सियामीज़' में आर्थिक दृष्टि से परतंत्र स्त्री को प्रताड़ित किया जाता है। कहानी की पात्र मनासी कहती है "मैं ने देखा है, आदमी हमेशा चाहता है कि औरत मूर्खा-सी बनी उस पर निर्भर रहे।"[2] स्त्री को नौकरी और आर्थिक दृष्टि से सक्षम रहना ही परतंत्रता से निकलने का सबसे बड़ा माध्यम है।

मनीषा जी की 'समुद्री घोड़ा' कहानी में आदिवासी लड़की का गैंग रेप का वर्णन हुआ है। डॉ. इसाक कहता है कि "वह लड़की ह्यूमन ट्रैफिकिंग में अनाम और लापता हुई थी। उसका गैंग रेप हुआ था। उसके जननांग बुरी तरह क्षत-विक्षत थे। वह देखने में आदिवासी लड़की थी। गोदना से भरी देह।वह पंद्रह दिन हमारे आई सी यू में कोमा में रही थी।"[3] भारत में दिन-ब-दिन गैंग रेप के आरोप बढ़ते ही जा रहे हैं। लोगों की शिक्षा का स्तर बढ़ने के बावजूद भारतीय समाज के लिए यह समस्या गंभीर तथा जटिल बन गयी है। महिलाओं के विरुद्ध होती हिंसा के पीछे मुख्य कारण है पुरुष प्रधान सोच।

मनीषा जी ने 'अवक्षेप' कहानी में 'आदिवासी महिला छात्रावास' में रहनेवाली छात्राओं की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। इस कहानी में आदिवासी गर्ल्स हॉस्टल के अंदर चल रही घिनौनी व्यवस्था का चेहरा उभरकर सामने आता है। हॉस्टल की मेट्रन लड़कियों को बड़े अधिकारियों के साथ यौन शोषण करवाती है। इस बात की पुष्टि 'अवक्षेप' कहानी की आदिवासी पात्र बेनु के माध्यम से होती है।

'कालिंदी' कहानी में रेड लाइट एरिया का वर्णन हुआ है। चंद पैसों के कारण प्रेमी या पति अपनी ही लड़कियों को रेड लाइट एरिया में बेच देते हैं। दीपू कहता है "मध्यम वर्ग के लोग अपनी औरतों से इकलाएँ तीन मंजिला पीली इमारत में कस्टमर बनकर जाते थे जहाँ अनैतिक सिर खोले हुए घूमती थी।"[4] कालिंदी वेश्याओं का वर्णन करते हुए कहती है कि "माँ देखती मां के बदन पर तरह-तरह के निशान। सिगरेट के जले सलेटी निशान, नीले-जामुनी निशान और बहुत बुरी तरह डर जाती।"[5] लेखिका ने 'कालिंदी' कहानी के माध्यम से वेश्या स्त्रियों के संघर्ष का वर्णन किया है।

'मास्टरनी' कहानी में कामकाजी स्त्री के शोषण का वर्णन हुआ है। "हमारे समाज में जब एक लड़की शादी के बाद अपना मायका छोड़कर ससुराल में कदम रखती है तो उसके दिल में उम्मीद होती है कि यहाँ सब उसे दिल से अपनायेंगे और अपने परिवार का हिस्सा समझेंगे। ज़्यादातर घरों में मेहमानों के विदा होते ही नयी बहू को उसके कर्तव्यों, ज़िम्मेदारियों और फर्ज की टोकरी पकड़ा दी जाती है। लेकिन उसके हक और अधिकारों का क्या? उसके बारे में किसी ससुरालवाले ने बताया या गिनाया।"[6] 'मास्टरनी' कहानी की नायिका सुषमा जब शादी के बाद ससुराल आती है तो उसकी सास उसे घर का काम संभालने को बोलती है और नौकरी करने के लिए भी कहती है। नौकरी करते हुए घर और बच्चों को संभालना सुषमा के लिए मुश्किल हो जाता है। पति उसकी मदद न करके उसको ताना मारता रहता है। दिन-रात उससे लड़ता रहता है। सास के और पति के तानों को झेलते हुए वह संघर्ष का सामना करती है।

'खरपतवार' कहानी में डेनियल नामक पात्र शादीशुदा होने के बावजूद एंजेला के साथ ज़बरदस्ती यौन संबंध रखता है। एंजेला एक अनाथ और गरीब लड़की है । जब वह गर्भवती बन जाती है तब उसके पास खाने के लिए भी पैसा नहीं होता। डेनियल उसको अपनाने की झूठी तसल्ली देता रहता है। अंत में एंजेला भूख और खून की कमी के कारण मर जाती है। सदियों से नारी जितनी पूजी जा रही है उतनी ही बोझ तले दबती भी जा रही है। नारी के शोषण के तरीके संदर्भ के अनुसार और समय के अनुसार बदलते रहते हैं। पर हर मोड़ पर नारी की विवशता ही दृष्टिगोचर होती है। कभी वह समाज से, तो कभी वह परिवार के अन्य सदस्यों से पीड़ित होती है।

'कुरजा' कहानी में एक विधवा स्त्री के संघर्ष का वर्णन हुआ है। कुरजा को गाँववाले डायन मानते थे। उसको गाँव में आना मना था। इसलिए वह गाँव के बाहर जंगल में अकेली अपने बच्चे के साथ रहती

थी। गाँव में जो भी दुर्घटना होती तो गाँव के लोग कुरजा को ज़िम्मेदार मानकर उसे और उसके बच्चे को मारते थे। एक बार ठाकुर के घर लड़का हुआ। कुरजा देखने के लिए चली जाती है। लड़का जैसे ही रोने लगा तो कुरजा को ज़िम्मेदार मानकर उसे सौ जूते मारने का आदेश ठाकुर देता है। अंधविश्वास के कारण गाँववाले कुरजा का शोषण करते रहते हैं।

निष्कर्ष : आधुनिक हिंदी साहित्य जगत की उभरती युवा कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ जी का सृजनात्मक साहित्य हिंदी की अनमोल निधि है। हिंदी कथा साहित्य की वे सशक्त लेखिका हैं।21 वीं सदी में हम आधुनिक समाज, आधुनिक भावबोध और आधुनिक विचारधारा की बात तो करते हैं। पर बात जब स्त्री की आती है, स्त्री देह, स्त्री-मनोवेग, स्त्री अस्मिता की आती है तब हम पाते हैं कि स्त्री की स्थिति, आज भी प्राचीन रूढ़िवादी मानसिकता से ग्रसित ही है। कहीं न कहीं आज भी उसे देह की आज़ादी नहीं मिली है और वह उस कठपुतली की भाँति है जिसकी डोर समाज के हाथों में है। मनीषा कुलश्रेष्ठ जी अपनी कहानियों में सामाजिक स्तर पर स्त्री मन, स्त्री शोषण को बखूबी चित्रित करती हैं। उनके द्वारा लिखित कहानियों में स्त्रियाँ अपने अस्तित्व को लेकर सवाल करती नज़र आती हैं।

संदर्भ सूची :

1. मंजुलता सिंह,'हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग', आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, संस्करण 1970, पृ.22

2. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग-रूप,रस-गंध-2', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली; संस्करण 2022, पृ.461

3. वही, पृ.683

4. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग-रूप,रस-गंध-1', सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृ.302

5. वही, पृ.312

6. https://hindi.momspresso.com

◆ शोधार्थी, वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज (विस्टास), पल्लवरम, चेन्नई।
afeefasaboor@gmail.com, 9710623178

◈ असिस्टेंट प्रोफेसर एंड हेड, हिन्दी विभाग, वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज (विस्टास), पल्लवरम, चेन्नई।
poornima.hindi@velsuniv.ac.in, 9884026296

मानवतावादी कवि धूमिल

◆ डॉ .माजिदा एम

सारांश- मानवतावादी विचारधारा में मानव के हित या कल्याण को सबसे अधिक प्रमुखता दिया जाता है।इसके अनुसार संसार की समस्त प्रगति का केंद्र मनुष्य है। दीन-दुखियों की सेवा करना,दुख के कारणों पर विचार करना, उसका समाधान ढूँढ निकालना, व्यक्ति की असीम शक्ति को जगाना, मनुष्य की गरिमा पर विश्वास करना, मानव जाति की एकता तथा अखंड़ता पर बल देना आदि मानवतावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। धूमिलजी ने अपनी कविताओं के ज़रिए भारत के दीन-हीन साधारण लोगों से सहानुभूति एवं पक्षधरता दिखायी है। उनके अनुसार मानव जीवन की सभी समस्याओं की जड़ भूख है। अशिक्षा, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, समझौते की भावना, नियतिवाद आदि जीवन को दूभर बनानेवाली हर एक समस्या का चित्रण धूमिलजी ने अपनी कविताओं में किया है।मानवीय हितों को बनाए रखने का प्रयास धूमिल की रचनाओं में हम देख सकते हैं ।

बीज शब्द –मानवतावाद, सेवा, दुख के कारण,